अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के देशबंध की उत्कृष्ट स्थिति होती है-
(क) एक समय (ख) तीन पल्योपम में एक समय
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) तीन पल्योपम में तीन समय कम (ख)

(ii) वैक्रिय शरीर के सबसे थोड़े हैं-
(क) अबंधक (ख) देशबंधक
(ग) सर्वबंधक (घ) विशेषाधिक (ग)

(iii) देशबंध सर्वबंध का थोकड़ा भगवती सूत्र के किस शतक से लिया गया है-
(क) आठवें (ख) नवें
(ग) छठे (घ) पच्चीसवें (क)

(iv) जो मन से क्रोध आदि कषाय का सेवन करते हैं, वे कुशील कहलाते हैं-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) लिंग (घ) यथासूक्ष्म (घ)

(v) पुलाक का अर्थ है-
(क) गोधूम (ख) शालि
(ग) निस्सार धान्य कण (घ) चित्तकबरा (ग)

(vi) स्थित, अस्थित और स्थविर, ये तीनों कल्प मिलते हैं
(क) बकुश प्रतिसेवना में (ख) कषाय कुशील में
(ग) निर्ग्रन्थ स्थानक में (घ) पुलाक में (घ)

(vii) कषाय कुशील की संख्या होती है-
(क) पृथक्त्व हजार करोड़ (ख) पृथक्त्व सौ करोड़
(ग) पृथक्त्व हजार (घ) पृथक्त्व करोड़ (क)

(viii) पुलाक, बकुश, प्रतिसेवना और कषाय कुशील में भाव मिलता है-
(क) क्षायिक (ख) उपशम
(ग) क्षयोपशम (घ) कोई नहीं (ग)

(ix) स्थित, स्थविर और जिनकल्प, ये तीन कल्प पाते हैं-
(क) सूक्ष्म सम्पराय में (ख) यथाख्यात में
(ग) परिहार विशुद्धि में (घ) सामायिक संयत में (ग)

(x) सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात संयत आराधक होने पर पदवी पाता है-
(क) 1 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 3 (क)

(xi) वर्धमान और अवस्थित, ये दो परिणाम पाते हैं-
(क) सामायिक संयत में (ख) सूक्ष्म सम्पराय संयत में
(ग) यथाख्यात संयत में (घ) परिहार विशुद्धि संयत में (ग)

(xii) वेदनीय कर्म बांधता हुआ जीव कितने कर्म वेदता है-
(क) 8,7,4 (ख) 7,8,6
(ग) 6,4,8 (घ) 1,4,7 (क)

(xiii) कर्मबंध के स्थान हैं-
(क) 2 (ख) 1
(ग) 3 (घ) 4 (घ)

(xiv) पन्नवणा सूत्र के कौनसे पद में पदवी का थोकड़ा चलता है-
(क) 24 वें (ख) 26 वें
(ग) 20 वें (घ) 27 वें (ग)

(xv) 'काकिणी' रत्न का उत्पत्ति स्थान है-
(क) चक्रवर्ती की राजधानी (ख) चक्रवर्ती की आयुधशाला
(ग) चक्रवर्ती का भण्डार (घ) वैताढ्य पर्वत का मूल (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) एक मुहूर्त्त में होने वाले अधिकतम भवों की संख्या 65536 होती हैं। (हाँ)

(ii) वनस्पति काय के देशबंध का जघन्य अन्तर क्षुल्लक भव और एक समय अधिक का नहीं होता है। (नहीं)

(iii) रत्न प्रभा पृथ्वी का दस हजार वर्ष की स्थिति वाला नैरयिक उत्पत्ति के प्रथम समय में सर्वबंधक नहीं होता है। (नहीं)

(iv) लिंग से आजीविका चलाने वाले लिंग कषाय कुशील कहलाते हैं। (नहीं)

(v) 'अपरिस्रावी' स्नातक का एक भेद है। (हाँ)

(vi) निर्ग्रन्थ और स्नातक में जिनकल्प और स्थविर कल्प के धर्म नहीं होते, अतः वे कल्पोपपन्न होते हैं। (नहीं)

(vii) लब्धि की अपेक्षा कषाय कुशील साधु में एक साथ अधिकतम चार शरीर हो सकते हैं। (नहीं)

(viii) निर्ग्रन्थ और स्नातक के मात्र ईर्यापथिक का आस्रव होता है। (हाँ)

(ix) इत्वरकालिक सामायिक चारित्र जघन्य 7 दिन और उकृष्ट 4 माह का होता है। (नहीं)

(x) यथाख्यात संयत यथाख्यात चारित्र को छोड़कर सीधा 3 स्थानों में जाता है। (हाँ)

(xi) सामायिक, छेदोपस्थापनीय संयतपना जघन्य 1 भव में और उत्कृष्ट 3 भवों में आता है। (नहीं)

(xii) 5 स्थावर के दण्डक 7 अथवा 8 कर्म बांधते हैं। (हाँ)

(xiii) 13 और 14 वें गुणस्थान में अघाति कर्मों का वेदन है। (हाँ)

(xiv) दण्ड रत्न चार हाथ लम्बा नहीं होता है। (नहीं)

(xv) स्त्री रत्न पुत्र प्रसव नहीं करती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	वैक्रिय शरीर	(क) एक संयम स्थान	6 स्थान
(ii)	आहारक शरीर सर्वबंध काल	(ख) 400 से 600 करोड़	एक समय
(iii)	क्षुल्लक भव का प्रमाण	(ग) भगवती 25-7	कर्मग्रन्थ 40-41
(iv)	नियंठा	(घ) कर्मग्रन्थ 40-41	भगवती 25-6
(v)	स्नातक	(च) 6 स्थान	एक संयम स्थान
(vi)	जीव के परिणाम	(छ) भगवती 25-6	प्रज्ञापना 13 वाँ पद
(vii)	प्रतिसेवना कुशील	(ज) एक समय	400 से 600 करोड
(viii)	निर्ग्रन्थपना	(झ) चक्रवर्ती के बराबर	उत्कृष्ट 3 भव
(ix)	संजया	(य) प्रज्ञापना 13 वाँ पद	भगवती 25-7
(x)	अनुपहारिक	(र) अहमिन्द्र	आयम्बिल
(xi)	यथाख्यात संयत	(ल) उत्कृष्ट 3 भव	अहमिन्द्र
(xii)	कर्म बांधते हुए बांधे के	(व) 6 भंग	453 भंग
(xiii)	कर्म बांधते हुए वेदने के	(क्ष) 453 भंग	6 भंग
(xiv)	पुरोहित रत्न उत्पत्ति	(त्र) आयम्बिल	चक्रवर्ती की राजधानी
(xv)	गाथापति रत्न अवगाहना	(ज्ञ) चक्रवर्ती की राजधानी	चक्रवर्ती के बराबर

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मुझ में रहे हुए जीवों में न तो सर्वबंध होता है और न ही देशबंध होता है। विग्रहगति/अपान्राल सिद्ध गति/गतिर्यन्तर/बाटा बहती

(ii) मैं सम्पूर्ण संसार में 4 बार से अधिक प्राप्त नहीं होता हूँ। आहारक शरीर

(iii) मुझमें सर्वदा अवसर्पिणी काल के दूसरे आरे के समान काल (स्थिति) रहता है। हरिवास-रम्यक्वास

(iv) मुझे उद्देशकों का समूह कहते हैं। शतक

(v) मैं मोह का पर्यायवाची शब्द हूँ। ग्रन्थ

(vi) मुझमें पाँच कल्प पाते हैं। कषाय कुशील

(vii) मैं सदा मोक्ष में जाता हूँ। स्नातक

(viii) मेरा प्रयोग एक भव में उत्कृष्ट 3 बार हो सकता है। पुलाक लब्धि

(ix) मेरा उदय पहले से दसवें गुणस्थान तक रहता है। राग

(x) मुझमें मात्र साकार उपयोग होते हैं। सूक्ष्मसम्पराय संयत

(xi) मैं एक भव में उत्कृष्ट 120 बार प्राप्त हो सकता हूँ। छेदोपस्थापनीय संयतपना

(xii) मुझमें 6 कर्म ही बंधते हैं। 10वाँ गुणस्थान/सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान

(xiii) मुझमें चार अघाति कर्मों का वेदन होता है। 13 वाँ/14 वाँ गुणस्थान

(xiv) मैं अपनी जाति की सर्वोत्तम वस्तु हूँ। रत्न

(xv) मेरी अवगाहना चक्रवर्ती महाराज से चार अंगुल छोटी है। श्रीदेवी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) वैक्रिय शरीर के देशबंध की स्थिति कितनी है ?

उ. समुच्चय जीव में जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट 33 सागर में एक समय कम। वायुकाय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य के देशबंध की स्थिति जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की। नारकी, देव के वैक्रिय शरीर के देशबंध की स्थिति जघन्य 10000 वर्ष में 3 समय कम, उत्कृष्ट 33 सागर में एक समय कम

(ii) यथासूक्ष्म पुलाक किसे कहते हैं ?

उ. मन से अकल्पनीय वस्तु को ग्रहण करने का विचार करने वाला और ज्ञानपुलाक आदि सभी भेदों में थोड़ा-थोड़ा दोष लगाने वाला।

(iii) उपकरण बकुश के भेद कितने और कौन से हैं ?

उ. उपकरण बकुश के 5 भेद हैं-1. आभोग बकुश-जानते हुए दोष लगावें। 2. अनाभोग बकुश- नहीं जानते हुए दोष लगावें। 3. संवृत्त बकुश- छिपकर दोष लगावें 4. असंवृत्त बकुश-प्रकट रूप से दोष लगावें। 5. यथासूक्ष्म बकुश-उत्तर गुणों के विषय में प्रकट

(iv) शय्यातर कल्प का अर्थ लिखिए।

उ. चौबीस ही तीर्थंकरों के साधुओं का शय्यातर (जिसके मकानादि में रात्रि में रहे, उसके यहाँ से अगले दिन से) के यहाँ से आहार नहीं लेने का कल्प है।

(v) उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर का जन्म कब होता है ?

उ. उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर का जन्म तीसरे आरे के 3 वर्ष, 8 मास, 15 दिन बीतने के बाद होता है।

(vi) सामायिक संयत सामायिक चारित्र को छोड़ता हुआ कितने और कौन से स्थानों में जाता है ?

उ. सामायिक संयत सामायिक चारित्र को छोड़ता हुआ 4 स्थानों में जाता है-
1. छेदोपस्थापनीय 2. सूक्ष्म सम्पराय 3. असंयत 4. संयतासंयत।

(vii) कर्मों के वेदन के स्थान कितने और कौनसे हैं ?

उ. कर्मों के वेदन के 3 स्थान है-1 से 10 गुणस्थान तक 8 कर्मों का वेदन, 11 से 12वें में 7 कर्मों का

वेदन, 13,14वें गुणस्थान में 4 अघाती कर्मों का वेदन।

(viii) खड्ग रत्न का कार्य क्या होता है ?

उ. यह हजारों कोसों की दूरी पर स्थित शत्रु का सिर काट डालता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) वैक्रिय शरीर के सर्वबंध की स्थिति कितनी है ? कारण सहित लिखिए।

उ. समुच्चय जीव में जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट दो समय की। वैक्रिय शरीर जीवों में उत्पन्न होता हुआ या लब्धि से वैक्रिय शरीर बनाता हुआ कोई जीव प्रथम एक समय तक सर्वबंधक रहता है। इसलिए सर्वबंध जघन्य एक समय तक रहता है। किन्तु कोई औदारिक शरीर वाला जीव वैक्रिय शरीर धारण करते समय सर्वबंधक होकर फिर मर कर देव या नारक हो तो प्रथम समय में वह सर्वबंध करता है, इस दृष्टि से वैक्रिय शरीर के सर्वबंध का उत्कृष्ट काल दो समय का है।

(ii) आहारक शरीर के सर्वबंधक सबसे अल्प क्यों हैं ?

उ. आहारक शरीर चौदहपूर्वधर मुनियों में से भी किसी-किसी के ही होता है, वे भी विशेष प्रयोजन होने पर ही आहारक शरीर धारण करते हैं। फिर सर्वबंध का काल भी सिर्फ एक समय का है, अतः आहारक शरीर के सर्वबंधक सबसे अल्प है।

(iii) निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं ?

उ. जो बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ (परिग्रह) मिथ्यात्व मोह और प्रारम्भिक तीन कषाय के चौक-मोहनीय की 13 सर्वघाती प्रकृति और इनकी सीमा में आने वाले 9 कषायों की ग्रन्थि से रहित होते हैं, वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

(iv) बकुश एवं प्रतिसेवना कुशील साधु कब आराधक और विराधक माने जाते हैं ?

उ. बकुश एवं प्रतिसेवना कुशील साधु यदि पूर्व में लगे हुए दोषों की आलोचना कर लेते हैं तो वे आराधक माने जाते हैं। जब तक पूर्वकृत दोषों की आलोचना नहीं करे तब तक शुद्ध संयम का वर्तमान में पालन करने पर भी वे विराधक रह जाते हैं।

(v) छहों नियंठों में कषाय द्वार लिखिए।

उ. पुलाक, बकुश, प्रतिसेवना कुशील में कषाय पावे-संज्वलन चौक (क्रोध,मान, माया, लोभ)
कषाय कुशील में कषाय पावे-संज्वलन की 4,3,2,1
निर्ग्रन्थ और स्नातक अकषायी होते हैं। निर्ग्रन्थ उपशांत कषायी तथा क्षीण कषायी दोनों तरह के होते हैं, जबकि स्नातक क्षीण कषायी ही होते हैं।

(vi) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र के दो भेद कौन से हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उ. विशुद्ध्यमान- क्षपक श्रेणि अथवा उपशम श्रेणि पर चढ़ते हुए साधु के परिणाम उत्तरोत्तर शुद्ध रहने के कारण उनका दसवें गुणस्थान में चारित्र विशुद्ध्यमान सूक्ष्म संपराय कहलाता है।
संक्लिश्यमान- उपशम श्रेणि से गिरते हुए साधु के परिणाम संक्लेश युक्त होते हैं, इसलिए दसवें गुणस्थान में उनका चारित्र संक्लिश्यमान सूक्ष्म संपराय चारित्र कहलाता है।

(vii) पाँचों संयतों में शरीर द्वार को लिखिए।

उ. सामायिक छेदोपस्थापनीय संयत में शरीर पावे 3,4 अथवा 5- तीन हो तो औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर। चार हो तो औदारिक, वैक्रिय, तैजस, कार्मण। पाँच शरीर हो तो-औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण।
परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय तथा यथाख्यात संयत में शरीर पावे तीन- औदारिक, तैजस और कार्मण।

(viii) सामायिक संयतपने और छेदोपस्थापनीय संयतपने में आकर्ष द्वार लिखिए।

उ. सामायिक संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ बार प्राप्त होता है। अनेक भवों में जघन्य दो बार उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार (7200) प्राप्त होता है।
छेदोपस्थापनीय संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट 120 बार। अनेक भवों में जघन्य दो

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) निर्ग्रन्थ और स्नातक के संयम स्थान होते हैं-
(क) 4 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 2 (ग)

(b) 'पुलाक' की जघन्य गति होती है-
(क) पाँचवाँ देवलोक (ख) पहला देवलोक
(ग) बारहवाँ देवलोक (घ) छठा देवलोक (ख)

(c) देशबन्ध का जघन्य अन्तर कितना हैं-
(क) एक समय का (ख) तीन समय का
(ग) 33 सागर (घ) दो समय (क)

(d) औदारिक शरीर के सबसे थोड़े कौन हैं-
(क) देशबन्धक (ख) अबन्धक
(ग) विशेषाधिक (घ) सर्वबन्धक (घ)

(e) निर्ग्रन्थ में अवस्थित परिणाम की उत्कृष्ट स्थिति होती है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) करोड़ पूर्व
(ग) एक समय (घ) देशोन क्रोड़ पूर्व (क)

(f) निर्ग्रन्थ में समुद्घात पाई जाती है-
(क) पाँच (ख) एक
(ग) एक भी नहीं (घ) तीन (ग)

(g) पुलाकादि पाँच नियंठा लोक के कितने भाग का स्पर्श करते हैं-
(क) सम्पूर्ण लोक को (ख) लोक का संख्यातवाँ भाग को
(ग) लोक के असंख्याता भागों को (घ) लोक के असंख्यातवें भाग को (घ)

(h) सामायिक चारित्र में लेश्या पाई जाती है-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 3 (घ) अलेशी (ख)

(i) आयु कर्म बांधता जीव कितने कर्म बांधता है-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 4 (क)

(j) ज्ञानावरणीय कर्म बांधता जीव कितने कर्म बांधता है-
(क) 6,4,8 (ख) 1,4,7
(ग) 7,8,6, (घ) 8,7,1, (ग)

(k) कर्म वेदन के कितने स्थान हैं-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 1 (घ) 3 (घ)

(l) ज्ञानावरणीय कर्म बांधता जीव कितने कर्मों का वेदन करता है-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 4 (क)

(m) वेदनीय कर्म वेदता जीव कितने कर्म वेदता है-
(क) 7,6,4 (ख) 8,7,4
(ग) 8,7,6 (घ) 8,7,1 (ख)

(n) कर्म बांधते हुए वेदे के कुल भंग कितने होते हैं-
(क) 453 (ख) 696
(ग) 42 (घ) 6 (घ)

(o) मोहनीय कर्म वेदते हुए कितने कर्म वेदता है-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 4 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) उस-उस शरीर के योग्य पुद्गलों को प्रथम समय में केवल ग्रहण करना, सर्वबन्ध कहलाता है। (हाँ)
(b) देवों और नारकों को नो कारणों से ही वैक्रिय शरीर प्राप्त होता है। (नहीं)
(c) समुच्चय जीव के देशबंध का अन्तर जघन्य एक समय, उत्कृष्ट 33 सागर से तीन समय अधिक है। (हाँ)
(d) नियंठा के 36 द्वारों में 25वाँ द्वार आहार का है। (नहीं)
(e) बीच के 22 तीर्थंकर के साधुओं में चार कल्प पालन की नियमा होती है। (हाँ)
(f) प्रतिसेवना कुशील को मनःपर्याय ज्ञान नहीं हो सकता। (हाँ)
(g) तीर्थ में पुलाक आदि छहों नियंठे नहीं माने जाते हैं। (नहीं)
(h) पुलाकादि पाँच नियंठा आहारक-अनाहारक दोनों होते हैं। (नहीं)
(i) परीत्त संसारी बनने पर संसार परिभ्रमण काल में कोई कमी नहीं आती। (हाँ)
(j) अन्तगढ सूत्र में वर्णित सभी 90 आत्माओं ने केवली समुद्घात की थी। (हाँ)
(k) पुलाकादि चारों नियंठों में क्षयोपशम व क्षायिक भाव होते हैं। (नहीं)
(l) परिहार विशुद्धि संयत जघन्य नवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का अध्ययन करते हैं। (हाँ)
(m) छदोपस्थापनीय संयत प्रतिसेवी ही होते हैं। (नहीं)
(n) परिहार विशुद्धि संयत स्वलिंग में ही होते हैं। (हाँ)
(o) सामायिक संयत में पाँचों शरीर हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	एक श्वासोच्छ्वास	(क) एक संयम स्थान	17 से अधिक क्षुल्लक भव
(b)	देशबन्ध-सर्वबन्ध	(ख)साता वेदनीय का बंध	भगवती 8/9
(c)	निर्ग्रन्थ	(ग) चक्रवती से दुगनी	यथाख्यात चारित्र
(d)	कषाय कुशीलपना	(घ) पाँच स्थावर में	उत्कृष्ट 8 भव में
(e)	परिहार विशुद्धि संयत	(च) 17 से अधिक क्षुल्लक भव	तीर्थ में
(f)	यथाख्यात संयम	(छ) भगवती 8/9	एक संयम स्थान
(g)	13वाँ गुणस्थान	(ज) यथाख्यात चारित्र	साता वेदनीय का बंध
(h)	हाथी की अवगाहना	(झ) उत्कृष्ट 8 भव में	चक्रवती से दुगनी
(i)	एक पदवी पावे	(य)तीर्थ में	नारकी-देवता
(j)	आठ पदवी वाले जावे	(र) नारकी-देवता	पाँच स्थावर में
(k)	छठी नरक से निकला हुआ	(ल) 9 पदवी पावे	दस पदवी पावे
(l)	कर्म वेदते हुए वेदे के	(व) दो हाथ लम्बा	42 भंग
(m)	वायुकाय से निकला हुआ	(क्ष) 696 भंग	9 पदवी पावे
(n)	कर्म वेदते हुए बांधने के	(त्र) दस पदवी पावे	696 भंग
(o)	चर्मरत्न	(ज्ञ) 42 भंग	दो हाथ लम्बा

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) मैं दो ठिकानों पर पाया जाता हूँ। आहारक शरीर

(b) मैं प्रथम समय में केवल घृतादि को ग्रहण करता हूँ। माल पुआ

(c) मेरे अन्दर अधिकतम भवों की संख्या 65536 होती है। क्षुल्लक भव

(d) मेरी 13 सर्वघाती प्रकृतियाँ हैं। मोहनीय कर्म

(e) मेरा प्रयोग करने वाला साधु नियमा प्रतिसेवी होता है। पुलाक लब्धि

(f) मैं 5 अथवा 2 कर्मों की उदीरणा करता हूँ। निर्ग्रन्थ

(g) मैं अधिकतम पाँच बार आ सकता हूँ। निर्ग्रन्थपना

(h) मेरी अधिकतम संख्या 8398 करोड़ तक संभव है। कषाय कुशील

(i) मुझमें संज्वलन लोभ कषाय का उदय रहता है। सूक्ष्म संपराय चारित्र/10वाँ गुणस्थान

(j) मुझमें दो वेद पाये जाते हैं। परिहार विशुद्धि संयत

(k) मुझमें दो नियंठा पाये जाते हैं। यथाख्यात संयत

(l) मैं नियमा पूर्वधर संयत हूँ, किन्तु मेरा संहरण नहीं होता है। परिहार विशुद्धि संयत

(m) मुझमें साकार उपयोग ही होता है। सूक्ष्म संपराय संयत/10वाँ गुणस्थान

(n) मैं वैताढ्य पर्वत के मूल में उत्पन्न होने वाला रत्न हूँ। हाथी-घोड़ा/अश्वरत्न

(o) मैं चार हाथ लम्बा रत्न हूँ। दण्डरत्न/चक्ररत्न/छत्ररत्न

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) तैजस कार्मण शरीर के देशबन्ध की स्थिति कितनी है ?
तैजस कार्मण शरीर के दो भंग होते हैं-अणाइया अपज्जवसिया (अनादि अनन्त) अभवी आसरी। अणाइया सपज्जवसिया (अनादि सान्त) भवी आसरी

(b) उद्देशक किसे कहते हैं ?
जिसमें विशेष-विषय का उद्देश्य करके विश्लेषण किया जाता है, उसे उद्देशक कहते हैं।

(c) स्नातक के पाँच भेद कौनसे हैं ?
1.अच्छवी, 2. अशबल, 3. अकर्मांश, 4. संशुद्ध एवं 5. अपरिस्रावी।

(d) किन सात बोलों का संहरण नहीं होता है ?
1 संयमशीला साध्वी, 2 अवेदी 3. परिहारविशुद्धि चारित्री 4. पुलाक साधु 5. अप्रमत्त संयत 6. चौदह पूर्वधारी और 7 आहारक लब्धि वाले साधु

(e) बकुश और प्रतिसेवना कुशील पूर्वप्रतिपन्न की अपेक्षा कितने समझना चाहिए ?
बकुश और प्रतिसेवना कुशील पूर्वप्रतिपन्न की अपेक्षा महाविदेह आदि क्षेत्र में पृथक्त्व सौ करोड़ सदैव मिलते हैं।

(f) सामायिक संयत में कितने व कौनसे कल्प पाये जाते हैं ?
सामायिक संयत में कल्प पावे 5- स्थित, अस्थित, स्थविर, जिनकल्प और कल्पातीत।

(g) 9 मोटी पदवियों के नाम लिखिए।
1.तीर्थंकर, 2. चक्रवर्ती, 3. बलदेव, 4. वासुदेव, 5. केवली, 6. साधु, 7. श्रावक, 8. सम्यग्दृष्टि, 9. मांडलिक राजा।

(h) छत्र रत्न का कार्य क्या होता है ?
सेना के ऊपर 12 योजन लम्बे, 9 योजन चौड़े छत्र के रूप में परिणत हो जाता है और शीत, ताप तथा वायु आदि से रक्षा करता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) आहारक शरीर प्रयोग बंध के अधिकारी कौन होते हैं ?
आहारक शरीर प्रयोग बंध के अधिकारी केवल मनुष्य ही हैं। उनमें भी ऋद्धि (लब्धि) प्राप्त, चतुर्दश पूर्वधर-प्रमत्त-संयत, सम्यग्दृष्टि, पर्याप्त, संख्यात वर्ष की आयु वाले, कर्मभूमिज में उत्पन्न, गर्भज

मनुष्य ही होते हैं।

(b) औदारिक शरीर-बंध में कौनसे आठ कारणों का उदय अपेक्षित है ?

1.वीर्यता-वीर्यान्तरायकर्म के क्षयोपशम में उत्पन्न शक्ति, 2. सयोगता-उपयोग सहित योगयुक्तता, 3. सद्द्रव्यता-जीव के तथारूप औदारिकशरीर योग्य तथाविध पुद्गलों (द्रव्यों) की विद्यमानता, 4. प्रमाद-शरीरोत्पत्तियोग्य विषय-कषायादि की प्रवृत्ति, 5. कर्म- औदारिक शरीर नामकर्म का उदय, 6. योग-कायादि की प्रवृत्ति, 7. भव-तिर्यंच एवं मनुष्य गति के स्थान रूप भव और 8. आयुष्य- तिर्यंच और मनुष्य का आयुष्य।

(c) शरीर बकुश किसे कहते हैं ?

शरीर बकुश-जो सौन्दर्य लालसा से हाथ, पैर, मुँह, केश आदि शरीर के अवयवों की शोभा-विभूषा करता है और जो कायगुप्ति से रहित होता है, उसे शरीर बकुश कहते हैं।

(d) छहों नियंठों में शरीर द्वार को लिखिए।

1.पुलाक निर्ग्रन्थ और स्नातक में शरीर पावे तीन-औदारिक,तैजस, कार्मण

2.बकुश, प्रतिसेवना कुशील में शरीर पावे तीन अथवा चार-तीन हो तो पूर्वोक्त, चार हो तो औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण।

3. कषाय कुशील में तीन, चार अथवा पाँच-तीन हो तो-औदारिक, तैजस, कार्मण। चार हो तो-औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण। पाँच हो तो-औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण।

(e) स्नातक लोक के असंख्यातवें भाग में, अनेक असंख्याता भागों में तथा सम्पूर्ण लोक में भी होता है, समझाइए।

स्नातक का क्षेत्र लोक के असंख्यातवें भाग में जो बतलाया है, वह 13वें गुणस्थानवर्ती संयोगी केवली के सामान्य अवस्था में रहने पर (केवली समुद्घात नहीं करने पर) बतलाया गया है। जब केवली केवली समुद्घात करते हैं तब दण्ड और कपाट अवस्था में भी लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं। जब वे मन्थान अवस्था में रहते हैं तब उनके आत्म-प्रदेश लोक के बहुत असंख्यात भागों में फैल जाते हैं। जब वे केवली समुद्घात के चौथे समय में अपने आत्म-प्रदेशों को सम्पूर्ण लोक में फैला देते हैं, तब उनका क्षेत्र सम्पूर्ण लोकव्यापी हो जाता है।

(f) पहले चार नियंठों में क्षयोपशम भाव ही मिलने का कारण स्पष्ट कीजिए।

क्योंकि छठे से लेकर दसवें गुणस्थान तक चारित्र मोहनीय की संज्वलन कषाय का क्षयोपशम (मंद विपाकोदय) बना ही रहता है तथा ये चारों नियंठे इन गुणस्थानों में ही मिलते हैं।

(g) यावत्कथित सामायिक चारित्र किसे कहते हैं ?

यावत्कथिक अर्थात् जीवन भर के लिए। जो सामायिक चारित्र जीवन पर्यन्त के लिए स्वीकार किया जाता है, उसे यावत्कथिक सामायिक चारित्र कहते हैं। यह चारित्र भरत-ऐरवत क्षेत्र के बीच में 22 तीर्थंकरों के शासन काल में (दूसरे से तेइसवें) तीर्थंकर तक के तीर्थ में) महाविदेह क्षेत्र में तथा सभी तीर्थंकरों की छद्मस्थ अवस्था में पाया जाता है।

(h) कर्म वेदते हुए बांधने के कुल भंग कितने होते हैं तथा कैसे बनते हैं ?

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम, गौत्र, अन्तराय, कर्म इन सबके 90-90 भंग, 90X7=630

मोहनीय के 66= 630+66= 696 कुल भंग होते हैं।

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) वैक्रिय शरीर के समुच्चय जीव की सर्वबन्ध की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) 2 समय (ख) 1 समय
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) दस हजार वर्ष में 3 समय न्यून (क)

(b) आहारक शरीर प्रयोग बन्ध का अधिकारी नहीं है-
(क) ऋद्धि प्राप्त (ख) चतुर्दश पूर्वधर
(ग) अप्रमत्त संयत (घ) सम्यग्दृष्टि (ग)

(c) तैजस-कार्मण शरीर कितने दण्डकों में पाया जाता है-
(क) 24 (ख) 22
(ग) 16 (घ) 12 (क)

(d) तिर्यच पंचेन्द्रिय के वैक्रिय शरीर के सर्वबन्ध का परकाय आसरी जघन्य अन्तर है-
(क) अन्नत काल (ख) क्षुल्लक भव
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) प्रत्येक क्रोड़ पूर्व (ग)

(e) वनस्पतिकाय के परकाय आसरी देशबन्ध का जघन्य अन्तर है-
(क) 1क्षुल्लकभव 1समय अधिक (ख) पुढ़वी काल
(ग) 3 समय (घ) 2 क्षुल्लक भव में 3 समय कम (क)

(f) चौथा पलिभाग है -
(क) भरत क्षेत्र (ख) जम्बूद्वीप
(ग) अढ़ाई द्वीप (घ) महाविदेह क्षेत्र (घ)

(g) प्रतिसेवना कुशील की उत्कृष्ट गति है-
(क) 12 वाँ देवलोक (ख) पहला देवलोक
(ग) आठवाँ देवलोक (घ) सर्वार्थ सिद्ध (क)

(h) स्नातक में अवस्थित परिणाम की जघन्य स्थिति है-
(क) एक समय (ख) 2 समय
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) देशोन क्रोड पूर्व (ग)

(i) मनोभक्षी आहार पाया जाता है-
(क) 24 दण्डक में (ख) 13 दण्डक में
(ग) 14 दण्डक में (घ) 16 दण्डक में (ख)

(j) पुलाक लब्धि एक भव में उत्कृष्ट कितनी बार प्राप्त होती है-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ग)

(k) सूक्ष्म संपराय चारित्री आराधक हो तो पदवी पाता है -
(क) इन्द्र (ख) सामानिक
(ग) लोकपाल (घ) अहमिन्द्र (घ)

(l) सातों एकेन्द्रिय रत्न होते हैं-
(क) पृथ्वीकाय रूप (ख) वनस्पतिकाय रूप
(ग) त्रसकाय रूप (घ) तेउकाय रूप (क)

(m) कर्म बांधते हुए बाधे का अधिकार पन्नवणा के पद में चलता है-
(क) 24 वें पद में (ख) 25 वें पद में
(ग) 26 वें पद में (घ) 27 वें पद में (क)

(n) शाश्वत गुणस्थान नहीं है-
(क) पहला (ख) छठा
(ग) सातवाँ (घ) ग्यारहवाँ (घ)

(o) संजया के थोकड़े का अधिकार भगवती सूत्र के कौनसे शतक में चलता है-
(क) 24 वें (ख) 25 वें
(ग) 26 वें (घ) 30 वें (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) असंख्य पुद्गल परावर्तन एक आवलिका के असंख्यातवें भाग के समयों के बराबर होता है। (हाँ)

(b) वायुकाय में रहते वैक्रिय लब्धि का प्रयोग पल्योपम के असंख्यातवें भाग काल में ही हो सकता है। (हाँ)

(c) सबसे छोटा भव(क्षुल्लक भव) 256 आवलिकाओं का होता है। (हाँ)

(d) लब्धि का प्रयोग प्रमाद अवस्था में होता है। (हाँ)

(e) पुलाक लब्धि वाला साधु पुलाकपने में देवायु का ही बंध करता है। (नहीं)

(f) कषाय कुशील 7 अथवा 8 अथवा 6 कर्म को बांधता है। (हाँ)

(g) पुलाक, पुलाकपने को छोड़ता हुआ असंयम में ही जाता है। (नहीं)

(h) निर्ग्रन्थ में समुद्घात नहीं होती हैं। (हाँ)

(i) बकुश, प्रतिसेवना कुशील में वैक्रिय लब्धि हो सकती है,आहारक लब्धि नहीं। (हाँ)

(j) ऋषभ नाराच संहनन वाला उपशम श्रेणि में काल करके अनुत्तर विमान में जाता है। (नहीं)

(k) प्रतिपद्यमान(प्राप्त करते हुए) की अपेक्षा सभी नियंठे शाश्वत हैं। (नहीं)

(l) परिहार विशुद्धि चारित्र एक विशेष प्रकार की उत्कृष्ट श्रेणि की तपाराधना है। (नहीं)

(m) चारों कोनों के चारों खण्ड़ों को चक्रवर्ती स्वयं जीतता है। (नहीं)

(n) दर्शनावरणीय कर्म को बांधता हुआ नारकी 8 कर्मो का वेदन करता है। (हाँ)

(o) एकेन्द्रिय में निरन्तर 7-8 कर्म बांधने वाले होते ही हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	निस्सार धान्य कण	(क) बकुश	पुलाक
(b)	चित्तकबरा	(ख) मोह	बकुश
(c)	ग्रन्थ	(ग) समान काल	मोह
(d)	संशुद्ध	(घ) चक्रवर्ती के बराबर	स्नातक
(e)	14 पूर्वधारी	(च) पुलाक	श्रुत केवली
(f)	पलिभाग	(छ) स्नातक	समान काल
(g)	चारित्र की पर्याय	(ज) उत्कृष्ट 9 बार	निकर्ष
(h)	दण्ड रत्न की अवगाहना	(झ) श्रुतकेवली	चार हाथ लम्बा
(i)	चर्म रत्न की अवगाहना	(य) निकर्ष	दो हाथ लम्बा
(j)	बढ़ई रत्न की अवगाहना	(र) यावत्कथिक	चक्रवती के बराबर
(k)	यथाख्यात संयतपना	(ल) चार हाथ लम्बा	उत्कृष्ट 5 बार
(l)	सूक्ष्म संपराय संयतपना	(व) गांगेय अणगार	उत्कृष्ट 9 बार
(m)	परिहार विशुद्ध संयतपना	(क्ष) दो हाथ लम्बा	उत्कृष्ट 7 बार
(n)	सामायिक चारित्र	(त्र) उत्कृष्ट 7 बार	यावत्कथिक
(o)	चार महाव्रत	(ज्ञ) उत्कृष्ट 5 बार	गांगेय अणगार

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a)	मैं एक भव में 2 बार व सम्पूर्ण संसार काल में 4 बार से अधिक प्राप्त नहीं होता हूँ।	आहारक शरीर
(b)	मैं उद्देशकों का समूह हूँ।	शतक
(c)	मेरे काल में आयुष्य, बल, शरीर, वर्णादि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती हैं।	उत्सर्पिणी काल
(d)	मैं वीतरागी गुणस्थान हूँ और मुझमें मात्र अवस्थित परिणाम ही होता है।	ग्यारहवाँ गुणस्थान
(e)	मैं अनुभूति में नहीं आने वाला उदय हूँ।	प्रदेशोदय
(f)	मैं पुलाक लब्धि के प्रभाव से नो संज्ञा वाला होता हूँ।	पुलाक साधु
(g)	मुझसे दसों दिशाएँ निकलती हैं।	8 रुचक प्रदेश
(h)	हम परिहार विशुद्धि चारित्र के अन्तर्गत वैयावृत्य करने वाले साधु हैं।	अनुपारिहारिक
(i)	मुझमें पाँचों कल्प पाये जाते हैं।	सामायिक संयत
(j)	मेरा अर्थ चारित्र पर्यायों के आधार पर संयोजन करना-तुलना करना है।	सन्निकर्ष
(k)	मुझ पर चक्रवर्ती की सेना सवार होकर गंगा और सिंधु जैसी महानदियों को पार करती है।	चर्मरत्न
(l)	मेरा वेदन 10 वें गुणस्थान तक होता है।	मोहनीय कर्म
(m)	मेरा जघन्य अन्तर 63 हजार वर्ष है।	छेदोपस्थापनीय चारित्र
(n)	मुझमें वैक्रिय लब्धि होती हैं पर मैं प्रयोग नहीं करता हूँ।	परिहार विशुद्धि चारित्र
(o)	मेरे प्रकट होने पर क्षायोपशमिक ज्ञान नहीं रहते हैं।	केवल ज्ञान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) औदारिक शरीर के सर्वबन्धक सबसे थोड़े क्यों हैं ?

उ. क्योंकि वे उत्पत्ति के प्रथम समय में ही पाये जाते हैं।

(b) आहारक लब्धि के प्रयोग काल में जीव का मरण नहीं होने का क्या कारण है ?

उ. क्योंकि आहारक लब्धि के प्रयोग काल में देशबंध की जघन्य व उत्कृष्ट दोनों ही स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त बतायी है।

(c) देव-नारकों की अपेक्षा मनुष्य-तिर्यंच में वैक्रिय शरीर प्रयोग बंध का कौनसा विशेष कारण है ?

उ. वैक्रिय शरीर नाम कर्मोदय से निमित्त वैक्रिय लब्धि।

(d) बकुश का सन्निकर्ष लिखिए।

उ. बकुश, पुलाक से अनन्तगुण अधिक है। बकुश, बकुश से, प्रतिसेवना कुशील से, कषाय कुशील से छट्ठाणवडिया है। बकुश, निर्ग्रन्थ और स्नातक से अनन्तगुण हीन है।

(e) निर्ग्रथ में परिणाम व उनकी स्थिति लिखिए।

उ. परिणाम- 2 वर्धमान और अवस्थित। वर्धमान की स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की, अवस्थित की -जघन्य 1 समय, उत्कृष्ट- अन्तर्मुहूर्त्त की।

(f) प्रतिसेवना कुशील का उपसम्पद्हान लिखिए।

उ. प्रतिसेवना कुशल, प्रतिसेवना कुशीलपने को छोड़ता हुआ चार स्थानों में जाता है- 1. बकुश, 2. कषाय कुशील 3. असंयम और 4. संयमासंयम।

(g) श्रावक का उत्पत्ति स्थान कौनसा है ?

उ. श्रावक रत्न अढ़ाई द्वीप के अन्दर तथा बाहर भी उत्पन्न होते हैं।

(h) आयुष्य कर्म को बांधता हुआ कितने कर्म बांधता है ?

उ. समुच्चय जीव तथा बहुत जीव आयुकर्म बांधते हुए 8 कर्म बांधते हैं। इसी तरह 24 ही दण्डक 8 कर्म बांधते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) तैजस कार्मण शरीर के देशबन्ध की स्थिति कितनी है ?

उ. तैजस कार्मण शरीर के दो भंग होते हैं- अणाइया अपज्जवसिया (अनादि अनन्त) अभवी आसरी। अणाइया सपज्जवसिया (अनादि सान्त) भवी आसरी।

(b) देशबन्ध-सर्वबन्ध से प्रमाणित कीजिए की क्षुल्लक भव औदारिक के 10 दण्डक में पाया जाता है ?

उ. समुच्चय एकेन्द्रिय, पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य, इन ग्यारह बोलों का स्वकाय की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक क्षुल्लक भव में तीन समय कम बतलाया है।

(c) आहारक शरीर लब्धि वालों को वैक्रिय लब्धि की प्राप्ति होने का क्या कारण है ?

उ. कषाय कुशील में चार शरीर का विकल्प एक ही तरह से बताया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बिना वैक्रिय शरीर प्राप्ति के आहारक शरीर नहीं होता। यदि ऐसा सम्भव होता तो चार शरीर का दूसरा विकल्प-औदारिक, आहारक,तैजस,कार्मण का बता दिया होता, किन्तु ऐसा नहीं बतलाया।

(d) छः ही नियंठों में भाव द्वार लिखिए।

उ. पुलाकादि चारों में क्षयोपशम भाव, निर्ग्रन्थ में औपशमिक और क्षायिक तथा स्नातक में क्षायिक भाव है।

(e) परिहार विशुद्धि चारित्र वाला, राजा के कुपित होने पर क्या करता है ?

उ. राजा मारने से अधिक क्या करेगा, ऐसा सोचकर वे संयत संथारा कर लेते हैं। अथवा राजा द्वारा जो समय सीमा दी गयी है, उसमें विहार कर जाते हैं किन्तु लिंग नहीं बदलते हैं।

(f) पाँचों संयतों में संयम-स्थान की अल्प-बहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े यथाख्यात का संयम स्थान एक, उनसे सूक्ष्म संपराय के असंख्यात गुणा, उनसे परिहार विशुद्धि के असंख्यात गुणा, उससे सामायिक, छेदोपस्थापनीय के परस्पर तुल्य, किन्तु परिहार विशुद्धि से असंख्यात गुणा।

(g) पुरोहित रत्न का कार्य लिखिए।

उ. पुरोहित रत्न शुभ मुहूर्त्त बतलाता है। लक्षण, हस्त रेखा आदि (सामुद्रिक) व्यंजन (तिल, मसा आदि) स्वप्न, अंग का फड़कना इत्यादि सबका शुभ-अशुभ फल बताता है। शान्ति पाठ करता है, जाप करता है।

(h) ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हुए वेदन करने से बनने वाले तीन भंग लिखिए।

उ. 1. सभी 8 वेदने वाले।

2. 8 वेदने वाले बहुत 7 का एक।

3. 8 वाले बहुत 7 वाले बहुत।

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) सबसे छोटे भव की स्थिति है-

(क) एक मुहूर्त्त (ख) 10 हजार वर्ष

(ग) 256 आवलिका (घ) 3 पल्योपम (ग)

(b) आहारक शरीर के देशबंध की उत्कृष्ट स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) 3 समय (घ) 256 आवलिका में 2 समय न्यून (ख)

(c) आहारक शरीर प्रयोग बंध का अधिकारी नहीं है-

(क) ऋद्धि प्राप्त (ख) चतुर्दश पूर्वधर

(ग) दशपूर्वधर (घ) अप्रमत्त संयत (ग)

(d) चक्रवती की सेना की शीत, ताप तथा वायु आदि से रक्षा करता है-

(क) छत्र रत्न (ख) चर्म रत्न

(ग) खड़ग रत्न (घ) मणि रत्न (क)

(e) 6 कर्म बंधक गुणस्थान है-

(क) 9वाँ (ख) तीसरा

(ग) 10वाँ (घ) 11वाँ (ग)

(f) पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा के श्रमण नहीं है-

(क) केशी श्रमण (ख) गौतम स्वामी

(ग) गांगेय अणगार (घ) उदक पेढाल पुत्र (ख)

(g) छठे-सातवें गुणस्थान में अवस्थित परिणाम की जघन्य स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 7 समय

(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) देशोन क्रोड़पूर्व (क)

(h) अनुदीरक भी होता है-

(क) निर्ग्रन्थ (ख) स्नातक

(ग) कषाय कुशील (घ) पुलाक (ख)

(i) पुलाक साधु पुलाकपने को छोड़ता हुआ जाता है-

(क) कषाय कुशील में (ख) प्रतिसेवना कुशील में

(ग) बकुश में (घ) स्नातक में (क)

(j) मनोभक्षी आहार पाया जाता है-

(क) नारकी में (ख) तिर्यंच में

(ग) मनुष्य में (घ) देवता में (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) गर्भज मनुष्य में वैक्रिय लब्धि के प्रयोग के प्रथम समय में भी जीव का मरण हो सकता है। (हाँ)

(b) नारकी के देशबंध की उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम में 1 समय कम है। (हाँ)

(c) आहारक लब्धि के प्रयोग काल में जीव का मरण नहीं होता। (हाँ)

(d) मोहनीय कर्म का वेदन 9वें गुणस्थान तक होता है। (नहीं)

(e) कर्म वेदते हुए बांधे के 453 भंग होते हैं। (नहीं)

(f) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले उत्तर गुण प्रतिसेवी ही होते हैं। (नहीं)

(g) सामायिक संयत नियमा पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा पृथक्त्व करोड़ होते हैं। (नहीं)

(h) छेदोपस्थापनीय संयत का उत्कृष्ट परिमाण प्रथम तीर्थंकर के तीर्थ आसरी संभावित होता है। (हाँ)

(i) एक समय में एक जीव के क्रोधादि चार में से एक कषाय का ही उदय रहता है। (हाँ)

(j) पुलाक साधु 8 या 7 कर्मों का बंध करता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	रजोरहण	(क) पलिभाग	स्वलिंग
(b)	महाविदेह क्षेत्र	(ख) दर्शनोपयोग	पलिभाग
(c)	निस्सार धान्य कण	(ग) वेदन	पुलाक
(d)	ग्रन्थ	(घ) स्वलिंग	मोह
(e)	प्रतिक्रमण	(च) अहमिन्द्र	व्रत
(f)	सामानिक	(छ) व्रत	अहमिन्द्र
(g)	अनाकार उपयोग	(ज) अनाहारक	दर्शनोपयोग
(h)	वर्धमान	(झ) पुलाक	अवस्थित
(i)	विपाकोदय	(य) मोह	वेदन
(j)	अपान्तराल गति	(र) अवस्थित	अनाहारक

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं चक्रवर्ती से दुगुनी अवगाहना वाला होता हूँ।	हाथी
(b)	मुझसे निकला हुआ जीव पूरी 23 पदवियाँ प्राप्त कर सकता है।	1, 2 देवलोक
(c)	मैं पंचेन्द्रिय रत्न हूँ और महासौभाग्यशाली, कार्यदक्ष और अत्यन्त सुन्दर है।	गजरत्न
(d)	मेरे 25वें पद में कर्म बांधते हुए वेदने का अधिकार चलता है।	पन्नवणा सूत्र
(e)	मैं अबंधक गुणस्थान हूँ।	14वाँ
(f)	मैं आठ कर्मों का नाश करता हूँ।	संयम (चारित्र)
(g)	मैं ऐसा संयत हूँ, जिसमें समुद्घात होता ही नहीं है।	सूक्ष्म संपराय
(h)	मुझमें आयुष्य, बल, शरीर, वर्णादि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।	उत्सर्पिणी काल
(i)	मैं जीव की ज्ञान-दर्शनात्मक प्रवृत्ति हूँ।	उपयोग
(j)	मैं त्वचा में रहे हुए छिद्रों से ग्रहण होता हूँ।	रोम आहार

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 12x2 = (24)

(a) पृथ्वीकाय का सकाय आसरी सर्वबंध का अन्तर लिखिए।

उ. जघन्य दो क्षुल्लक भव में तीन समय कम, उत्कृष्ट अनन्त काल (वनस्पतिकाल) का।

(b) एकेन्द्रिय रत्नों के नाम लिखिए।

उ. चक्र रत्न, छत्र रत्न, दण्ड रत्न, खड्ग रत्न, चर्म रत्न, मणि रत्न, काकिणी रत्न।

(c) मनुष्य में पायी जाने वाली पदवियों के नाम लिखिए।

उ. मनुष्य में चौदह पदवी पावे- नौ तो मोटी पदवी, पाँच पंचेन्द्रिय रत्न (हाथी, घोड़ा छोड़ कर)।

(d) ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हुए समुच्चय जीव कितने कर्मों को वेदता है, भंग सहित लिखिए।

उ. ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हुए समुच्चय जीव 7 या 8 कर्म वेदता है।

भंग 3- (1) सभी 8 वेदने वाले, (2) 8 वेदने वाले बहुत 7 वेदने वाला एक, (3) 8 वेदने वाले बहुत, 7 वेदने वाले बहुत।

(e) परिहार विशुद्धि चारित्र में श्रुत की मात्रा लिखिए।

उ. परिहार विशुद्धि संयत जघन्य नवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का तथा उत्कृष्ट देशोन (कुछ कम) दस पूर्व का अध्ययन करते हैं।

(f) यथाख्यात संयत में कितने परिणाम पाते हैं? उनकी स्थिति भी लिखिए।

उ. यथाख्यात संयत में दो परिणाम पाते हैं- वर्धमान और अवस्थित।

वर्धमान की स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त की।

अवस्थित की स्थिति- जघन्य एक समय, उत्कृष्ट देशोन करोड़ पूर्व की।

(g) छेदोपस्थापनीय संयत का उपसम्पद्हान लिखिए।

उ. 'छेदोपस्थापनीय संयत' छेदोपस्थापनीय चारित्र को छोड़कर 5 स्थानों में जाता है -1. सामायिक, 2. परिहारविशुद्धि, 3. सूक्ष्म सम्पराय, 4. असंयत, 5. संयतासंयत।

(h) सामायिक संयत का एक भव तथा अनेक भव आसरी आकर्ष लिखिए।

उ. सामायिक संयतपना एक भव में- जघन्य एक बार, उत्कृष्ट- पृथक्त्व सौ बार प्राप्त होता है।

सामायिक संयतपना अनेक भव में- जघन्य दो बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार (7200) प्राप्त होता है।

(i) अच्छवी किसे कहते हैं ?

उ. अच्छवी - छवि अर्थात् शरीर। योगों का निरोध किये हुए 14वें गुणस्थानवर्ती।

(j) कृतिकर्म कल्प को समझाइए।

उ. कृतिकर्म- चौबीस तीर्थंकरों के साधुओं के लिये यह कल्प है कि छोटी दीक्षा वाले साधु बड़ी दीक्षा वालों को वंदना नमस्कार करते हैं, उनका गुणग्राम करते हैं।

(k) वैक्रिय शरीर प्राप्ति के नौ कारणों में नवमाँ कारण लिखिए।

उ. वैक्रिय शरीर नाम कर्मोदय में निमित्त वैक्रिय लब्धि।

(l) वैक्रिय शरीर के सर्वबन्धक, देशबन्धक और अबन्धक की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े वैक्रिय शरीर के सर्व बंधक, उससे देश बंधक असंख्यात गुणा, उनसे अबन्धक अनन्त गुणा।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए (कोई बारह): - **12x3=(36)**

(a) **सयोगता और योग में अन्तर लिखिए।**

उ. पहला सयोग शब्द तद्योग्य शरीर पर्याप्ति की पूर्ति हेतु सहयोगी के रूप में तथा दूसरा योग शब्द पर्याप्ति पूर्ण होने के अनन्तर कायादि के माध्यम से जो औदारिक आदि योग्य वर्गणा का ग्रहण होता है, उससे समझना चाहिए।

(b) **देव-नारकों में उत्तर वैक्रिय करने पर सर्वबंध नहीं मानने का कारण लिखिए।**

उ. देव-नारकों में भवधारणीय वैक्रिय शरीर होता है। उनमें उत्तर वैक्रिय नहीं करने पर तथा उत्तर-वैक्रिय करने पर दोनों ही अवस्थाओं में वैक्रिय शरीर का देशबन्ध ही चलता रहता है क्योंकि पहले भी वैक्रिय शरीर के योग्य पुद्गलों का ग्रहण करते हैं और उत्तर वैक्रिय में भी वैक्रिय शरीर के पुद्गलों का ही ग्रहण करते रहते हैं, इस कारण से उत्तर वैक्रिय करने पर भी वैक्रिय शरीर का सर्वबन्ध नहीं मानकर देशबन्ध ही माना जाता है।

(c) **पृथ्वीकाय के देशबंध की जघन्य स्थिति कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

उ. पृथ्वीकाय के देशबन्ध की जघन्य स्थिति एक क्षुल्लक भव में 3 समय कम की होती है। क्योंकि विग्रह गति के 2 समय तथा 1 समय उत्पत्ति के प्रथम समय के सर्वबन्ध का, इन तीन समयों को छोड़कर क्षुल्लक भव के शेष समयों में जघन्य देशबन्ध होता है क्योंकि वर्तमान भव की आयु का उदय पूर्वभव की आयु के पूर्ण होते ही प्रारंभ हो जाता है। अतः बाटे बहती अवस्था (विग्रहगति में) में वर्तमान भव की आयु का उदय ही माना जाता है। इसी कारण से विग्रह गति के समयों को देशबन्धादि की स्थिति में कम किया जाता है।

(d) **सेनापति रत्न का कार्य लिखिए।**

उ. बीच के दोनों खण्डों को चक्रवर्ती स्वयं जीतता है और चारों कोनों के चारों खण्डों को चक्रवर्ती का सेनापति जीतता हैं यह वैताढ्य पर्वत की गुफाओं के द्वार दण्ड का प्रहार करके खोलता है और म्लेच्छों को पराजित करता है।

(e) **मोहनीय कर्म को वेदता हुआ मनुष्य कितने कर्म बांधता है ? भंग भी लिखिए।**

उ. मनुष्य 7,8,6 कर्म बांधते हैं। 7 वाले शाश्वत, 8 व 6 बांधने वाले अशाश्वत हैं।

भांगे 9 = 1. सभी सात बांधने वाले, 2. सात बांधने वाले बहुत, आठ बांधने वाला एक, 3. सात बांधने वाले बहुत, आठ बांधने वाले बहुत, 4. सात बांधने वाले बहुत, छह बांधने वाला एक, 5. सात बांधने वाले बहुत, छह बांधने वाले बहुत, 6. सात बांधने वाले बहुत, आठ बांधने वाला एक, छह बांधने वाला एक, 7. सात बांधने वाले बहुत, आठ वाले एक, छह बांधने वाले बहुत, 8. सात बांधने वाले बहुत, आठ बांधने वाले बहुत, छह बांधने वाले एक, 9. सात बांधने वाले बहुत, आठ बांधने वाले बहुत, छह बांधने वाले भी बहुत।

(f) **पाँचों संयतों में कल्प द्वार लिखिए।**

उ. 1. सामायिक संयत में कल्प पावे 5- स्थित, अस्थित, स्थविर, जिनकल्प और कल्पातीत।

2. छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि संयत में कल्प पावे 3- स्थित, स्थविर और जिनकल्प।

3. सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात संयत में कल्प पावे 3- स्थित, अस्थित और कल्पातीत।

(g) **परिहार विशुद्धि चारित्र के उत्कृष्ट अन्तर को समझाइए।**

उ. परिहारविशुद्धि चारित्र का उत्कृष्ट अन्तर अठारह कोटाकोटी सागरोपम छेदोपस्थापनीय चारित्र के समान समझना चाहिए। उत्सर्पिणी काल के 24वें तीर्थंकर के दो पाट तक परिहारविशुद्धि चारित्र होता है, उसके बाद दो कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण चौथे आरे में, तीन कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण पाँचवें आरे में तथा चार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छठे आरे में तथा इसी प्रकार अवसर्पिणी काल के चार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण पहले आरे में, तीन कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण दूसरे आरे में और दो कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण तीसरे आरे में परिहारविशुद्धि चारित्र नहीं होता। उसके बाद अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे में पिछले भाग में प्रथम तीर्थंकर के तीर्थ में परिहारविशुद्धि चारित्र होता है। इस प्रकार से परिहारविशुद्धि संयतों का उत्कृष्ट अन्तर (2+3+4, 4+3+2=18) 18 कोटाकोटी सागरोपम होता है।

(h) **पारिहारिक और अनुपारिहारिक किसे कहते हैं ?**

परिहार विशुद्धि चारित्र की आराधना में जो चार साधु छः महीने तक तप करते हैं, ये 'पारिहारिक' कहलाते हैं। जो चार साधु वैयावृत्य (सेवा) करते हैं, ये 'अनुपारिहारिक' कहलाते हैं।

(i) **पुलाक के मरण को किस अपेक्षा से समझा जाता है ?**

उ. पुलाकपने को छोड़कर जब कषाय कुशीलादि में आ जाते हैं, उस समय उनके पास पुलाक लब्धि तो रहती है, प्रयोग नहीं होता। मूलभाव एवं पूर्व पर्याय की अपेक्षा से उसकी गति एवं स्थिति दोनों मानी जाती है। जिसने पुलाक लब्धि का प्रयोग करने के बाद उसकी आलोचना आदि करके शुद्धि कर ली है, वह आराधक बन जाता है और कषाय कुशीलपन को प्राप्त कर यदि अन्तर्मुहूर्त में ही काल कर जाये तो उसका मरण,पुलाक का मरण माना जाता है।

(j) **प्रतिसेवना कुशील का शेष नियंठों के साथ सन्निकर्ष लिखिए।**

उ. प्रतिसेवना कुशील, पुलाक से अनन्तगुण अधिक है। प्रतिसेवना कुशील, प्रतिसेवना कुशील से, बकुश से और कषाय कुशील से छट्ठाणवडिया है। प्रतिसेवना कुशील, निर्ग्रन्थ से और स्नातक से अनन्तगुणहीन है।

(k) **निर्ग्रन्थपना अनेक भव की अपेक्षा कितनी बार प्राप्त होता है और कैसे ?**

उ. **निर्ग्रन्थपना** अनेक भवों की अपेक्षा से जघन्य 2 बार, उत्कृष्ट पाँच बार आता है। क्योंकि उपशम श्रेणि एक भव में दो बार हो सकती है, अतः ग्यारहवाँ गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना एक भव में 2 बार समझना चाहिए। निर्ग्रन्थपना अधिकतम तीन भवों में आता है, वह भी उत्कृष्ट 5 बार ही आता है। दो भवों में चार बार उपशम श्रेणि होने से ग्याहरवाँ गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना 4 बार घटित होता है तथा तीसरे भव में जब भी क्षपक श्रेणि करता है, तब उसे 12वें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना एक बार ही आता है, इस प्रकार से 3 भवों में 5 बार निर्ग्रन्थपना आ सकता है।

(l) **स्नातक लोक के अनेक असंख्याता भागों में किस अपेक्षा से होते हैं ?**

स्नातक केवली समुद्घात करते समय जब मन्थान अवस्था में रहते हैं तब उनके आत्म-प्रदेश लोक के बहुत असंख्यात भागों में फैल जाते हैं,उस समय लोक का बहुत भाग व्याप्त कर लेते हैं, थोड़ा भाग ही बाकी रहता है, इसलिए उनका क्षेत्र अनेक असंख्यात भाग हो जाता है।

(m) **पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा छहों नियंठों का परिमाण लिखिए।**

उ. पुलाक कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो जघन्य 1,2,3 उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार होते हैं।

बकुश और प्रतिसेवना कुशील नियमा पृथक्त्व सौ करोड़ होते हैं।

कषाय कुशील नियमा पृथक्त्व हजार करोड़ होते हैं।

निर्ग्रन्थ कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो जघन्य 1,2,3 उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ होते हैं। स्नातक नियमा पृथक्त्व करोड़ होते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वायुकाय के देशबंध की जघन्य स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 1 अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) एक क्षुल्लक भव में 3 समय कम (घ) एक मुहूर्त्त (क)

(b) वैक्रिय के समुच्चय जीव के सर्वबंध की उत्कृष्ट स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 2 समय

(ग) 33 सागरोपम में 1 समय कम (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (ख)

(c) जो काय गुप्ति से रहित होता है, वह है-

(क) पुलाक (ख) बकुश

(ग) प्रतिसेवना कुशील (घ) कषाय कुशील (ख)

(d) बकुश साधु होते हैं-

(क) तीर्थ में (ख) अतीर्थ में

(ग) तीर्थ-अतीर्थ में (घ) दोनों में नहीं (क)

(e) परिहार विशुद्ध चारित्र में शरीर पाये जाते हैं-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5 (ख)

(f) परिहार विशुद्धि संयत होते हैं-

(क) मूलगुण प्रतिसेवी (ख) उत्तरगुण प्रतिसेवी

(ग) अप्रतिसेवी (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(g) शाश्वत गुणस्थान नहीं है-

(क) पहला (ख) दूसरा

(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ (ख)

(h) देवता में पदवी पायी जाती है-

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार (क)

(i) वैताढ्य पर्वत के मूल में उत्पन्न होता है-

(क) मणिरत्न (ख)श्रीदेवी

(ग) घोड़ा (घ) काकिणी रत्न (ग)

(j) कर्म वेदते हुए वेदे के भंग हैं-

(क) 453 (ख) 6

(ग) 42 (घ) 696 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) एक मुहूर्त्त में होने वाले अधिकतम क्षुल्लक भवों की संख्या 65526 है। (नहीं)

(b) आहारक शरीर 1 भव में दो बार व सम्पूर्ण संसार काल में 4 बार से अधिक नहीं होता है। (हाँ)

(c) प्रतिसेवना कुशील काल करके उत्कृष्ट आठवें देवलोक में जाता है। (नहीं)

(d) निर्ग्रन्थ और स्नातक में संयम स्थान असंख्यात होते हैं। (नहीं)

(e) सूक्ष्म संपराय संयत में साकार उपयोग ही होता है। (हाँ)

(f) यथाख्यात संयत में हीयमान परिणाम नहीं होता है। (हाँ)

(g) पाँच स्थावर में निरन्तर आयु बंधक होते हैं। (हाँ)

(h) एक कर्म के बंधक गुणस्थान 10,11,12,13 हैं। (नहीं)

(i) मांडलिक राजा की अवगाहना जघन्य 2 हाथ होती है। (हाँ)

(j) 6 खण्डों के बीच के दोनों खण्डों को चक्रवती का सेनापति जीतता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	अशबल	(क) 7000 वर्ष	दोषरहित
(b)	अप्काय	(ख) निर्विश्यमान	7000 वर्ष
(c)	परिहार विशुद्धि चारित्र	(ग) चार हाथ लम्बा	निर्विश्यमान
(d)	वनस्पतिकाय	(घ) दोष रहित	10 हजार वर्ष
(e)	पलिभाग	(च) चार अंगुल लम्बा	समान काल
(f)	कालास्यवेषीय पुत्र	(छ) समान काल	गांगेय अणगार
(g)	दण्ड रत्न	(ज) गांगेय अणगार	चार हाथ लम्बा
(h)	चर्म रत्न	(झ) 10 हजार वर्ष	दो हाथ लम्बा
(i)	घोड़ा रत्न	(य) दो हाथ लम्बा	एक सौ आठ अंगुल लम्बा
(j)	मणिरत्न	(र) एक सौ आठ अंगुल लम्बा	चार अंगुल लम्बा

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2=(20)**

(a) मैं जघन्य नवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का अध्ययन करता हूँ। पुलाक/ परिहार विशुद्धिसंयत

(b) असंख्यात लोकों में जितने आकाश प्रदेश होते हैं, उतने मेरे स्थान होते हैं। संयम स्थान

(c) मैं वीर्यान्तराय कर्म से उत्पन्न शक्ति हूँ। वीर्यता

(d) मैं सबसे छोटा 256 आवलिका का भव हूँ। क्षुल्लक भव

(e) हम द्रव्य तथा भाव दोनों की अपेक्षा स्वलिंग में ही होते हैं। परिहार विशुद्धि संयत

(f) मैं स्वजातीय-परजातीय चारित्र की पर्यायों के साथ संयोजन करने पर होता हूँ। सन्निकर्ष

(g) मैं अबन्धक गुणस्थान हूँ। 14वाँ/अयोगी केवली

(h) मेरा वेदन 10वें गुणस्थान तक ही होता है। मोहनीय

(i) मैं विद्याधरों की उत्तर की श्रेणी में उत्पन्न होने वाला रत्न हूँ। श्री देवी

(j) मैं ऐसा रत्न हूँ कि मेरी अवगाहना चक्रवती से दुगुनी होती है। हाथी

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2=(18)**

(a) देव में वैक्रिय शरीर के देश बंध की स्थिति लिखिए।
देव के वैक्रिय शरीर के देशबंध की स्थिति जघन्य 10000 वर्ष में 3 समय कम, उत्कृष्ट 33 सागर में एक समय कम।

(b) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में वैक्रिय शरीर के देशबंध का अन्तर लिखिए।
स्वकाय आसरी- जघन्य- अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट- प्रत्येक करोड़ पूर्व

परकाय आसरी- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट- अनन्त काल (वनस्पतिकाल)

(c) निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं ?
जो बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ (परिग्रह) मिथ्यात्व मोह और प्रारम्भिक तीन कषाय के चौक-मोहनीय की 13 सर्वघाति प्रकृति और इनकी सीमा में आने वाले 9 कषायों की ग्रन्थि से रहित से रहित होते हैं, वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

(d) पुलाक साधु में उपसम्पद्हान द्वार लिखिए।

पुलाक, पुलाकपने को छोड़ता हुआ दो स्थानों में जाता है- 1. कषाय कुशील और 2. असंयम।

(e) बकुश साधु आहारक लब्धि का प्रयोग क्यों नहीं कर सकते हैं ?

क्योंकि इनमें उत्कृष्ट दस पूर्वों तक का ही ज्ञान होता है। जबकि आहारक लब्धि के लिए चौदह पूर्वों का ज्ञान अनिवार्य होता है।

(f) निर्ग्रन्थों में अनेक भवों की अपेक्षा आकर्ष लिखिए।

एक भव में- जघन्य 1 बार, उत्कृष्ट 2 बार

अनेक भवों में- जघन्य 2 बार, उत्कृष्ट 5 बार।

(g) एक जीव की अपेक्षा पुलाक साधु का काल अन्तर्मुहूर्त्त क्यों बताया है ?

पुलाकपने को प्राप्त करने वाला साधु, जब तक पुलाक लब्धि का प्रयोग पूर्ण नहीं होता, अन्तर्मुहूर्त्त काल पूरा नहीं होता तब तक वह पुलाकपने से गिरता नहीं है, मरण को तो पुलाक वैसे ही प्राप्त नहीं होता, इसलिए एक जीव की अपेक्षा पुलाक की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

(h) छेदोपस्थापनीय संयत में परिणाम लिखिए और उनकी स्थिति लिखिए।

छेदोपस्थापनीय संयत में परिणाम पावे तीन- हीयमान, वर्द्धमान, अवस्थित।

हीयमान, वर्द्धमान की स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त।

अवस्थित की स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट सात समय।

(i) 'यथाख्यात संयत' यथाख्यात चारित्र को छोड़कर सीधा कहाँ-कहाँ जाता है ?

'यथाख्यात संयत' यथाख्यात चारित्र को छोड़कर सीधा 3 स्थानों में जाता है- 1. सूक्ष्म सम्पराय 2. असंयत 3. सिद्ध (मोक्ष में)

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई 8) 8x4=(32)

(a) वेदनीय कर्म बांधता हुआ समुच्चय जीव कितने कर्म वेदता है ? भंग भी लिखिए।

समुच्चय जीव 8,7,4 कर्म वेदता है। 8,4 को वेदने वाले शाश्वत हैं, 7 वाले अशाश्वत।

भांगे 3=(1) सभी 8 व 4 कर्म वेदने वाले (2) 8 व 4 कर्म वेदने वाले बहुत, 7 कर्म वेदने वाला एक (3) 8 व 4 कर्म वेदने वाले बहुत, 7 कर्म वेदने वाले बहुत।

(b) पाँचों शरीरों के देशबंध, सर्वबंध और अबंध की शामिल अल्प बहुत्व लिखिए।

1. सबसे थोड़े आहारक शरीर के सर्वबन्धक, 2. उससे आहारक शरीर के देशबन्धक संख्यात गुणा,

3.उससे वैक्रिय शरीर के सर्व बन्धक असंख्यात गुणा, 4. उससे वैक्रिय शरीर के देशबंधक असंख्यात गुणा, 5.उससे तैजसकार्मण शरीर के अबंधक अनंत गुणा, किन्तु परस्पर में तुल्य होते हैं। 6. उससे औदारिक शरीर के सर्वबंधक अनंत गुणा, 7.उससे औदारिक शरीर के अबंधक विशेषाधिक, 8. उससे औदारिक शरीर के देशबंधक असंख्यात गुणा, 9. उससे तैजस् कार्मण शरीर के देशबंधक विशेषाधिक, 10.उससे वैक्रिय शरीर अबंधक विशेषाधिक, 11. उससे आहारक शरीर के अबंधक विशेषाधिक।

(c) **औदारिक शरीर के समुच्चय जीव के सर्वबंध का अन्तर काल लिखिए।**

औदारिक शरीर के समुच्चय जीव के सर्वबंध का जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भव ग्रहण पर्यन्त का है तथा उत्कृष्ट अन्तर समयाधिक पूर्वकोटि और तैतीस सागरोपम का होता है।

(d) **पुलाक को अन्य लिंग, गृहस्थ लिंग में किस अपेक्षा से समझना चाहिए ?**

पुलाक लब्धि वाला साधु जिसे एक देश से दूसरे देश में जाना आवश्यक हो, बीच में ऐसा राज्य आता हो, जिसमें जैन साधुओं के प्रवेश पर पाबन्दी हो, वहाँ अन्यलिंग अथवा गृहस्थलिंग धारण करके उस राज्य में प्रवेश कर लें। वहाँ किसी के पहचान जाने पर कोई आपत्ति खड़ी कर दे, बहुत बड़ा संकट उपस्थित करदे, अन्य कोई समाधान नहीं निकले तो विवश होकर जिनशासन की एवं संघ की सुरक्षा के लिए वह साधु उसी अन्यलिंग अथवा गृहस्थलिंग में रहते हुए ही पुलाक लब्धि का प्रयोग कर ले, इस अपेक्षा से अन्यलिंग, गृहस्थलिंग पुलाक में माना जाता है।

(e) **पाँचों संयतों में चारित्र-पर्याय की अल्पबहुत्व लिखिए।**

1.सबसे थोड़े सामायिक संयत और छेदोपस्थापनीय संयत के जघन्य चारित्र पर्याय-परस्पर में तुल्य।

2.उससे परिहारविशुद्धि के जघन्य चारित्र-पर्याय अनन्तगुणा।

3.उससे परिहारविशुद्धि के उत्कृष्ट चारित्र-पर्याय अनन्तगुणा।

4.उससे सामायिक, छेदोपस्थापनीय के उत्कृष्ट चारित्र-पर्याय परस्पर तुल्य किन्तु परिहारविशुद्धि से अनन्त गुणा।

5. उससे सूक्ष्म सम्पराय के जघन्य चारित्र-पर्याय अनन्तगुणा।

6. उससे सूक्ष्म सम्पराय के उत्कृष्ट चारित्र पर्याय अनन्तगुणा।

7. उससे यथाख्यात के अजघन्य-अनुत्कृष्ट चारित्र-पर्याय अनन्तगुणा।

(f) **परिहार विशुद्धि संयत का जघन्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

परिहारविशुद्धि संयत का जघन्य अन्तर 84000 वर्षों का बतलाया, उसे इस प्रकार समझना चाहिए-अवसर्पिणी काल का पाँचवा और छठा आरा तथा उत्सर्पिणी काल का पहला और दूसरा आरा, ये सभी इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष के होते हैं, इन चारों में परिहारविशुद्धि चारित्र नहीं होता। यहाँ अन्तिम तीर्थंकर के पश्चात् पाँचवें आरे में परिहारविशुद्धि चारित्र का काल कुछ अधिक और उत्सर्पिणी काल के तीसरे आरे में परिहारविशुद्धि चारित्र को स्वीकार करने से पहले का काल अल्प होने से उसका उल्लेख नहीं किया गया है।

(g) **पुलाक लब्धि वाला पुलाकपने में काल नहीं करता तो फिर उसकी गति किस अपेक्षा से बतलाई है ?**

पुलाकपने को छोड़कर जब कषाय कुशीलादि में आ जाते हैं, उस समय उनके पास पुलाक लब्धि तो रहती है, प्रयोग नहीं होता। मूलभाव एवं पूर्व पर्याय की अपेक्षा से उसकी गति एवं स्थिति दोनों मानी जाती है। जिसने पुलाक लब्धि का प्रयोग करने के बाद उसकी आलोचना आदि करके शुद्धि कर ली है, वह आराधक बन जाता है और कषाय कुशीलपन को प्राप्त कर यदि अन्तर्मुहूर्त में ही काल कर जाये तो उसका मरण, पुलाक का मरण माना जाता है, इसी अपेक्षा से उसकी गति और स्थिति बतलाई है।

(h) **पाँच संयतों में पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा परिमाण लिखिए।**

1.सामायिक संयत नियमा पृथक्त्व हजार करोड़ होते हैं।

2. छेदोपस्थापनीय संयत कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो जघन्य-उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ करोड़ होते हैं।

3. परिहारविशुद्धि संयत कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो जघन्य-1,2,3 उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार होते हैं।

4. सूक्ष्म सम्पराय संयत कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते हैं। यदि होते हैं तो जघन्य 1,2,3 उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ होते हैं।

5. यथाख्यात संयत जघन्य-उत्कृष्ट पृथक्त्व करोड़ होते हैं।

(i) **परिहार विशुद्धि संयत का उत्कृष्ट काल 58 वर्ष कम दो करोड़ पूर्व वर्ष किस अपेक्षा से है ?**

परिहारविशुद्धि संयत का उत्कृष्ट काल 58 वर्ष कम दो करोड़ पूर्व का है। जैसे कि अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के सान्निध्य में करोड़ पूर्व वर्ष की आयु वाला कोई मुनि परिहारविशुद्धि चारित्र अंगीकार करे और उसके जीवन के अन्तिम समय में एक करोड़ पूर्व वर्ष की आयु वाला कोई मुनि उसके पास यह चारित्र ग्रहण करें। इसके बाद फिर कोई मुनि इस चारित्र को ग्रहण नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में देशोन 2 करोड़ पूर्व तक यह चारित्र रहता है। क्योंकि दोनों ही अपनी आयु के 29 वर्ष बीतने पर इस चारित्र को ग्रहण करते हैं। प्रत्येक के 29-29 वर्ष कम कर देने से 58 वर्ष कम दो करोड़ पूर्व का परिहारविशुद्धि संयत का उत्कृष्ट काल होता है।